भक्तामर स्तोत्र

तर्ज- क्योंकि सास भी कभी.....

रचयिता- पू. आ. विशद सागर जी

क्योंकि भक्तामर स्तोत्र निराला है, कष्टों को जो हरने वाला है।
आदि जिन की भक्ती, देती है जो मुक्ती, करते विशद जो मनन।।

भक्तामर नत मुकुट सुमणि वाले, गहन पाप तम को हरने वाले।
भव सिन्धू में स्वामी नौका हैं जगनामी आदि प्रभू हैं परम्।।१।।क्योंकि...
देव इन्द्र आदिक श्रुत के ज्ञाता, जिन स्तुति कर पाते सुखसाता
शब्द अर्थ छन्दादि, द्वादश सब इन्द्रादि, करते हैं, पद में नमन।।२।।क्योंकि...

मन्द बुद्धि हूँ मैं अति अज्ञानी, किन्तू भक्ती करने की ठानी
प्रतिबिम्ब ज्यों जल में, बालक अपने मन में, पाने की रक्खे लगन।।३।।

गुण सागर प्रभु गुण की खान रहे, सुर गुरु भी कहने से पूर्ण रहे।
क्षुब्ध हों जल जन्तू, प्रलयंकारी हो सिन्धू, पार करें को सुजन।।४।।

शिशु रक्षा करने को क्या ना जाए, क्या म गपति के आगे म गी ना आए।
उर में विशद भक्ती, हीन मेरी शक्ती, थुति में लगी है लगन।।५।।क्योंकि...

पात्र हास्य का मैं लघु श्रुत ज्ञानी, प्रभु भक्ति की मैंनी अब ठानी।
आम्र कलियाँ पाके, कुहुके जो खुश होके, कोयल होकर के मगन।।६।।क्योंकि...

तव स्तुति जो भाव से करती है, अपने कर्मो को वो हरती है।
ज्यों सूर्योदय पाए, क्षण में ही नश जाए, फैला तिमिर हो सघन।७

मंद बुद्धि हम स्तुति करने आए, चित्त हरे जो शांती फैलाए।
कमल पर जल जैसे, मोती होवे वैसे, सोहे ये जग का कथन।।८।

दोष दुख नाशी, स्तुति गाई, नाम जाप भी पावन अतिशायी।
कमल ज्यों सूर्योदय हो, अनुपम जो विकसित हो, महिमा है प्रभु की अगम।।६।।

तब स्तुति कर तुम सम हो जाए, क्या अचरज कुछ इसमें कहलाए।
आश्रय में जो आए, निज सम ना कर पाए, ऐसा प्रभु ना हो अर्हन्।। १०।।क्योंकि...

इक टक तुम दर्शन जो पाते हैं, अन्य देव ना उन्हें सुहाते हैं।
नीर जल जो पावे, क्षीर ना फिर भावे, करके प्रभु दर्शन।।११।।क्योंकि...

वीतराग गुण में प्रभु लीन रहे, परमाणु जिन देह के श्रेठ कहे।
देह में थे जितने, परमाणु थे उतने, तुम सा ना कोई है तन।।१२।।

तब मुख जो अनुपम अविकार कहा, सुर नर नाग नयन मनहार अहा।
कहाँ चन्द्र मण्डल है, सकलेक निर्वल है, ढाक पत्रें सा हो दिन।।१३।।

पूर्ण चन्द्र सम छवि तव मन भावे, तीन जगत तव गुण ना कह पावे।
एक नाथ त्रिभुवन में, आधारभव वन में, रोके को करके यतन।।१४क्योंकि...

प्रलय पवन से गिरि-गिर जाते हैं, किन्तु मेरु गिरि हिल ना पाते हैं।
देवों की ललनाएँ, मन ना डिगा पाएँ, करके कोई भी यतन।।१५।।क्योंकि...

दीप तेल बाती बिन धूम कहे, लोक प्रकाशी पावन आप रहे।
आँधी ऐसी आए, गिरि वर उड़ उड़ जाए, फिर भी हैं तुम से चमन।।१६।।क्योंकि...

अस्त ना हो राहू ना ग्रस पाए, तीन लोक तब ज्ञान में दिखलाए।
मेघ ना ढक पाए, सूरज भी शर्माए, तुम आगे करके यतन।।१७।।

नित्य उदित मद मोह के परिहारी, मेघ राहु से हैं जो विनिवारी।
सौम्य मुखाम्बुज हे!, चंद कांति युत वाले, तुमसे है ये जग चमन।।१८।।क्योंकि...

निशि दिन शशि रवि का नहि काम रहा, तव मुख चंद हरे तम घाम अहा।
खेत शुभ लहराए, धान्य भी पक जाए, जलधर का फिर क्या यतन।१६।।क्योंकि...

जो सुबोध है तुमरे पास प्रभो!, हरि हरादि में वह ना रहा विभो!।
रुज में हो कांती, कांच में हो भ्रान्ती, हे प्रभु तुम हो अमन।।२०।।

हरि हरादि सबदेव सदा ध्याए, किन्तु आपके आज दर्श पाए।
श्रद्धा जिन में आए, अन्य कोई ना भाए, करते तव चरणों नमन।।२१।।क्योंकि...

शत नारी शत सुत उपजाती है, किन्तु आपसी कोई पाती है।
पूरव से सूर्योदय,सब दिश से तारे ग्रह, उगते है जिनका कथन।।२२।।क्योंकि...

सत्य पुरुष मुनि नाथ कहे जाते, अमल सूर्य तमहारी कहलाते।
म त्युजंय कहलाते, शरण छोड़ जो जाते, करते हैं जग में भ्रमण।।२३।क्योंकि...

आद्य ब्रह्म विभु ईश्वर भोगाव्यय, असंख्य अचिन्य योगीश्वर हैं अक्षय।
काम केतू इक गाए, अनन्त ज्ञान मय पाए, अनेक संत तव पद नमन।।२४।।क्योंकि...

बुध विबुधार्चित बुद्ध कहाए हैं, शंकर ब्रह्मा सुखकर गाए हैं।
विधाता हे जिनवर! पुरुषोत्तर अखलेश्वर, करते हैं धर्म प्रवर्तन।।२५।।क्योंकि...

त्रिभुवन दुखकर तव पद में वन्दन, भूतल भूषण तव पद करें नमन।
हे त्रिभुवन स्वामी, भव सर शोषक नामी, तव पद में विशद नमन।।२६।।क्योंकि...

हे जिन! क्या आश्चर्य ये कहलाए, गुण आश्रय जो अन्य नहीं पाए।
दोष आश्रय पाएँ, स्वप्न में न आएँ, करने जिनके दर्शन।।२७।।क्योंकि...

तरु अशोक ऊँचा बतलाया है, निर्मल रूप प्रभु का भाया है।
मेघ में दिनकर ज्यों, अंध किरणों से त्यों, भागे जो होवे सघन।।२८।।क्योंकि...

मणिमय सिंहासन के ऊपर स्वामी, स्वर्णिम शोभित होते जगनामी।
रवि का उदयाचल पे, प्रभु का सिंहासन पे, होता है पावन दर्शन।।२९।।क्योंकि...

स्वर्णिम कान्ती वाले जिन गाए, चॅवर ढुराने देवृवेत लाए।
मेरू सम जिनवर तन, चॅवर ढुराते पावन, झरना हो जैसे परम।।३०।।क्योंकि...
तीन लोक सम क्षत्र त्रय गाए, मणिमय शशि सम शोभा जो पाए।
सूर्य आतप नाशी, जिन गुण का परकाशी, जिन पद हों कर्म शमन।।३१।।क्योंकि...

जिन ध्वनि दशों दिशा में गुँजाए, जय घोषक जो पावन कहलाए।
जिनवर के गुण गाए, यश गाथा फैलाए, ऐसा है आगम कथन।।३२।।क्योंकि...

कल्प वुक्ष की कलियाँ झरती हैं, मन्द पवन जो प्रमुदित करती है।
श्री जिनेन्द्र की वाणी, जग की है कल्याणी, हो पुष्प व ष्टी सघन।।३३।।क्योंकि...

तन भामण्डल की शोभा पाए, त्रिजग कांति भी फीकी पड़ जाए।
चन्द्र कांती सी शीतल, आतप खोए निर्मल, शोभित हो जग में अमन।। ३४।।क्योंकि...

द्रव्य तत्त्व गुण जो प्रगटाते हैं, स्वर्ग मोक्ष की राह दिखाते हैं।
ऊँकार मय पावन, दिव्य ध्वनि मन भावन, विशदार्थ जिनके वचन।।३५।।क्योंकि...

जहाँ जहाँ प्रभु जी पग धरते हैं, सुर कमलों की रचना करते हैं।
चरणाम्बुज नख सोहें, भविजन के मन मोहें, करते हैं प्रभु जी गमन।।३६।।क्योंकि...

धर्म देशना आप सुनाते हैं, अन्य देव ना वैभव पाते हैं।
रवि में जो ज्योति है, ग्रह में ना होती है, होते हैं प्रभु जी अमन।।३७।।क्योंकि...

गण्डथल मद जल से शन जाते, भौंरे जिस पर आकर गुंजाते।
कुपित हो गज आए, भक्त ना भय खाए, करके प्रभू का भजन।।३८।।क्योंकि...

गण्डस्थल हाथी का छिद जाए, गज मुक्ता से भूमी चमकाए।
ऐसा केहरि आए, हानी ना कर पाए, तव भक्त जो है सघन।।३९।।क्योंकि...

प्रलय पवन की अग्नी घोर चले, उठे तिलंगें चारों ओर भले।
जग भक्षण कारी हो, भयंकर जो भारी हो, शान्त हो कर स्मरण।।४०।।क्योंकि...

काला नाग कुपित होकर आए, निर्भयता को भक्त सदा पाए।
भक्ती का ले आश्रय, बढ़ता जाए निर्भय, करके प्रभू का भजन।।४१।। क्योंकि...

हय गय का रव होवे भयकारी, शक्ती शाली न प दल हो भारी।
भक्ती से नश जाए, कुछ भी ना कर पाए, ज्यों रवि हो तम हनन।।४२।।क्योंकि...

रण में भलों से गज भिंद जाए, रुधिर धार कर पार शत्रु आए।
अरि सेना दुर्जय हो, भक्ति का आश्रय हो, पाए विजय ले शरण।।४३।।क्योंकि...

क्षुब्ध जलधि बड़वानल हो भारी, नक्र चक्र घड़ियाल हो भयकारी।
तूफान जो आए, जलयान फँस जाए, छूटे जो तव कर भजन।।४४।।क्योंकि...

रोग जलोधर होवे भारी हो जाए, जीने की आशा भी खो जाए।
जिन पद को जो ध्याए, पीड़ा सब मिट जाए, कामदेव सा पाए तन।।४५।।क्योंकि...

बँधा हुआ हो सांकल से कोई, खून से लथ पत पीड़ित हो सोई।
नाम तव जो ध्याए, बन्धन सब कट जाए, हो जाए जीवन चमन।।४६।।क्योंकि...

कुंजर समर सिंह रुज दावानल, कारागार शोक अहि होय अनल।
गुण महिमा जो गाए, भय कोई ना रह पाए, दुःखों का होवे शमन।।४७।।क्योंकि...

विविध पुष्प जिन गुण के जो पाए, प्रभु स्तुति की माल बना लाए।
कण्ठ में जो लाए, विशद लक्ष्मी पाए, मानतुंग जैसी परम्।।४८।।

गुणोद्यान के तव ये पुष्प लिए, तव तुथि माला निर्मित विशद किए।
कण्ठाभरण करते, मोक्ष लक्ष्मी वरते, मानतुंग जैसी परम्।।४८।।

★ ★ ★

हिन्दी अनुवाद

भक्तामर स्तोत्र

तर्ज– जीवन है पानी की बूँद

(मुनि विमर्श सागर द्वारा रचित)

भक्तामर नत मुकुट मणि-झिलमिल होती लड़ी-लड़ी।
ज्ञान ज्योति प्रगटी टूटे-पाप कर्म की कड़ी-कड़ी।।
भवसागर में गिरते जन-कर्मभूमि का प्रथम चरण।
आदिनाथ प्रभुवर जिनके-चरण युगल हैं आलम्बन।।
सम्यक् वन्दन कर मनवा हर्षाये रे।।१।।

द्वादशांग का जो ज्ञाता-तत्त्वज्ञान पटु कहलाता।
मन-मोहक स्तुतियों से—सुरपति प्रभु के गुण गाता।।
त्रिभुवन चित्त लुभाऊँगा-मैं भी प्रभु गुण गाऊँगा।
आदिनाथ तीर्थेश प्रथम-निश्चय उनको ध्याऊँगा।।
प्रभु की भक्ति ही संकल्प जगाये रे।।२।।

देव-सुरों से है पूजित-पादपीठ जो अतिशोभित।
तज लज्जा स्तुति गाने-तत्पर हूँ मैं बुद्धि रहित।।
चन्द्रबिम्ब जल में जैसे—अभी पकड़ता हूँ वैसे।
बालक ही सोचा करता—विज्ञ मनुज सोचे कैसे।।
बालक हूँ फिर भी मन तो उमगाये रे।।३।।

चंद्रकान्ति सम गुण उज्ज्वल-कहने सुरपति में ना बल।
हे गुणसागर! कौन पुरुष-कहने को हो सके सबल।।
प्रलयकाल की वायु प्रचण्ड-नक्र-चक्र हों अति उद्दण्ड।
ऐसा सिंधु भुजाओं से पार करेगा कौन घमण्ड।।
प्रभु तेरी भक्ति नौका बन जाये रे।।४।।